

ॐ

भूमिका

मैं नीचे सही करनार सब सज्जन लोगों से विनती करता हूँ कि मैंने गुरु अनोपदासजी महाराज के जो उपदेश है उनको झुलणा बनाकर छपवाये है, जिसको आप लोग पढ़ के पूरे-पूरा ध्यान देंगे ताकि आपको मालूम होगा कि जगत में क्या अंधेर है। कोई भूल-चूक हो तो माफ करें।

आपका सेवक

सोनी हरिचन्द

वास सिरोही नगर राजपुताना

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ न्याय चिन्तामणि

॥ झुलणां ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ न्याय चिन्तामणि लिख्यते ॥

आद से कुदरती इंड पैदा हुआ, इंड में उपजी धरण माई ।
 वजर का शरीर में कच्चा पारा, बहोत करोड़ों ही मण ब्रज रगत साही ॥
 पेल रगत की जड़ खान उपजी, मानवी गज घोड़ा भैंस गौ-माई ।
 कुत्ता बिल्ली बन्दर कैई जीव उपजे, लारा सूं पंखेरु खाण सवाई ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते जड़ चेतन दोय गर्भ के मांय ।
 करोड़ अठारह ही वन फल उपजे, पांच तंत गुण तीन पृथ्वी मांय ॥ 1 ॥

सर्व गुणा की आ पृथ्वी जोय ले, पृथ्वी का गुण देख भारी ।
 पृथ्वी पेट में राक्षसी वाणिया, सर्व जातों से आ जात न्यारी ॥
 ज्यां अनोपस्वामीजी नकलंग आविया, राक्षसों ऊपर दुष्ट खारी ।
 राक्षसे जगत को नाश कर डालियो, अन्न बिना डोलते पुरुष-नारी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते नकलंग न्याव निशाण धारी ।
 गुणों को पति तो पृथ्वी जाणिये, गुण विचारिया काम सारी ॥ 2 ॥

पृथ्वी का गुण भेख भी भुलगा, जाल के पंथ में जोग भी पेठा ।
 राक्षसी वेद की वार्ता सीखते, पलीत की साधना करण को बैठा ॥
 राक्षसी जाल कर रसोड़ा जीमते, मीठा के लोभ से जीमते ऐंठा ।
 मांस दारु कुं भी जोगी खाणे लगा, शुद्र की चाल में सर्वे ही सेठा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, झटा बढ़ावे ज्युं बकरा घेठा ।
 सो बाणिये इन नाम पर जादू चलाय के, पाप के काम को दे दिया लेठा ॥ 3 ॥

पृथ्वी पेट में उपज होवती, पृथ्वी पेट में सर्व माया ।
 पृथ्वी पेट में रसाला होवती, पृथ्वी माता तो जुग जाया ॥
 सर्वे ही जीवाजून पृथ्वी पेट में, पृथ्वी पालती सर्व काया ।
 सरवे ही बीजग धरण में नीपजे, और से बीजग नहीं आया ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, पृथ्वी पेट में देख थाया ।
 पृथ्वी सबको भोजन पूरती, पृथ्वी जगत को जल पाया

॥ 4 ॥

पृथ्वी पेट में कंचन नीपजे, पृथ्वी पेट में तांबा ज्यूं रुपा ।
 पृथ्वी पेट में रांगा शीशा लोहा, पृथ्वी पेट में अमृत कूपा ॥
 पृथ्वी पेट में हीरा पन्ना मोती, पृथ्वी पेट में नरपत भूपा ।
 पृथ्वी पेट में देवद्वारा बणे, पृथ्वी पेट में दीपक धूपा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, पृथ्वी पेट में रूप सरूपा ।
 पृथ्वी पेट में अस्थान बांधते, संत भी बांधते झूपडी झूपा

॥ 5 ॥

पृथ्वी पेट में गौमाता बड़ी, पृथ्वी पेट में भैंस माती ।
 पृथ्वी पेट में बकरियां घेटियां, पृथ्वी पेट में फूल पाती ॥
 पृथ्वी पेट में खर घोड़ा ऊँट, पृथ्वी पेट में मस्त हाथी ।
 पृथ्वी पेट में पवन पाणी बड़ा, पृथ्वी पेट में अगन राती ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, सर्व जीवाजून जस गाती ।
 पृथ्वी पेट में अन्न तरवर रुई, पृथ्वी दरियावां से जल लाती

॥ 6 ॥

पृथ्वी पेट में खांड गुड़ नीपजे, पृथ्वी पेट में दाड़म दाखां ।
 पृथ्वी पेट में केला सीताफल, पृथ्वी पेट में नारेल पाकां ॥
 पृथ्वी पेट में काजु पीस्ता लिलुआ, पृथ्वी पेट में फणस फल जांका ।
 पृथ्वी पेट में नींबु नारंगिया, मुंगफलियां, और सर्व साखां ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, सर्वेई जीमते खोल बाकां ।
 पृथ्वी का गुण कांई-कांई दाखवु, पृथ्वी का गुण करोड़ो लाखां

॥ 7 ॥

पृथ्वी पेट में सेतु सिकोतरा, झंबेरी बीजोरा बहोत भारी ।
 पृथ्वी पेट में धामण ग्रांगड़ी, लुकाबी फालसा फूलवारी ॥
 पृथ्वी पेट में पीलु निबोलियां, आंवला केरला गुणकारी ।
 पृथ्वी पेट में मोहुड़ा वे, आंबली सिंगोड़ा सिध सारी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, एरंड काकड़ी मौजदारी ।
 पृथ्वी पेट में आम कलमी घणा, अन्न प्रतिफल जुगतारी

॥ 9 ॥

पृथ्वी पेट में वालम काकड़ी, पृथ्वी पेट में सींबड़ा वेते ।
 पृथ्वी पेट में खरबुजा मतीरा, राज जीमण में प्रीत देते ॥
 पृथ्वी पेट में तुरियां तिंडियां, साग कर थाल में परस लेते ।
 पृथ्वी पेट में गलका तुरियां, आलरा चकियां सर्व रेते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, करेला वालोरा लाय जेते ।
 पृथ्वी पेट में सींबड़ी राएडांडी, पहाड़ की तिड़िया खेत खेते

॥ 10 ॥

पृथ्वी पेट में कोला कालिंगरा, कोंकाड़ा रीगणा भेंड़िया भारी ।
 पृथ्वी पेट में शकरकंद आलुआं, अरबीआं गाजरां गत न्यारी ॥
 पृथ्वी पेट में रतालु पींडालु, कांदा हलदी आदु गुणकारी ।
 पृथ्वी पेट में परजण लसण, बतुआ साग की मौजदारी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जमीकंद पाय कोई जोगधारी ।
 पृथ्वी पेट में मुला मेथी गोबी, सनलेवा पालका सलगम सारी

॥ 11 ॥

पृथ्वी पेट में लूण धांणा जीरा, लुंग डोड़ा राई दाल चीणी ।
 पृथ्वी पेट में जावंत्री जायफल, मिर्ची केशर वाट झीणी ॥
 पृथ्वी पेट में धोली मिर्चा कालीसा, जीरा काचरी हाथ लेणी ।
 और पीपल सुंठ सबको वाटके, चुल्हे के उपर साग देणी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, पोवणे वाली तो हंस वेणी ।
 हल्दी लसण आदु सरव दे साग में, जीम गुण देखले क्या केणी

॥ 12 ॥

पृथ्वी पेट में तूर मसूर वे, पृथ्वी पेट में मूंग भी होवे ।
 पृथ्वी पेट में चवला चणा, मोठ पद्मणी उसी की दाल पोवे ॥
 पृथ्वी पेट में कलत मडुआ, और बरटी कुरा कुरी जगत जोवे ।
 पृथ्वी पेट में क्रांग रांला मणसा, कोदरा तांदल राज मोवे ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, कांगड़ी सांवलाई का तांदल पोवे ।
 सर्वे मेवा फल मानवी जीमे, तोई मांस का डूबोड़ा धरम खोवे ॥ 13 ॥

पृथ्वी पेट में गेहूँ जव नीपजे, पृथ्वी पेट में बाजरी मक्की ।
 पृथ्वी पेट में अड़द चावल चीणा, लोक भी जीमके बहोत सुखी ॥
 पृथ्वी पेट में सर्व तल तजारा, तेल भी जीमते जोत अखी ।
 पृथ्वी पेट में चरस गांजा भांग, जती नर वास्ते तीन लखी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, सूरा नर अमल को पास रखी ।
 पृथ्वी पेट में जरदा वाड़ेला, वे पुरवी मालवी पुर पकी ॥ 14 ॥

पृथ्वी पेट में अजमा नीपजे, पृथ्वी पेट में गूंद भी गेरा ।
 पृथ्वी पेट में लोदर पीपरामूल, अस्त्री वास्ते रुप सेरा ॥
 पृथ्वी पेट में हरड़े सालम, जीमके देखले जोर तेरा ।
 पृथ्वी पेट में दूध घी जीमते, रोग भी भागता खेर खेरा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जुवार भी होवती लेर लेरा ।
 गुप्ती पाप से पृथ्वी डूबती, डगता दिखता सर्व डेरा ॥ 15 ॥

जरा सी बात को दृष्टानं कह दियो, करोड़ों ही वस्तुओ देवती धरणी ।
 करोड़ अठाहरा ही वन फल देवते, जड़ चेतन की पृथ्वी जरणी ॥
 राक्षसी वाणिजा गौ कटावते, जगत की हरदी साफ करणी ।
 होम जादू कर काल पड़ावते, भूख से खोलगे कंथ परणी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जान को मार दी साफ नरणी ।
 कुता बिल्ली बन्दर भूख से मर गया, पक्षी भी मर गया रोज हरणी ॥ 16 ॥

राक्षसी कुल का वाणिया बाजते, विष्णु कुल का वाणिया नहीं ।
 आद शुद्र नीच वाणिया राक्षसी, ब्रह्म कुली का भी वाणिया नहीं ॥
 दूत दानव भी वाणिया ठेठ से, महादेव कुली का भी वाणिया नहीं ।
 पाप जादू कर नाश कर डालियो, धर्म की नीत में वाणिया नहीं ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, दोनों ही दीन में वाणिया नहीं ।
 जैन को नाम तो पंथ है राक्षसी, देवता कुली में वाणिया नहीं ॥ 17 ॥

ब्याज का लोभ में गरु कटावते, धरम का भेद में वाणिया नहीं ।
 धान घी रुई पर घाल दी बाड़ियां, जगत पे राजी तो वाणिया नहीं ॥
 बकर कसाई पे वोरा है वाणिया, जीव तारण को वाणिया नहीं ।
 घूस खावण को राक्षसी वाणिया, राज वदावण को वाणिया नहीं ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, सत की बात में वाणिया नहीं ।
 धन खावण को लोग बुझावते, ब्रह्म का मीठा तो वाणिया नहीं ॥ 18 ॥

जगत का भाव को वाणिये बांधियो, राज का भाव में वाणिया नहीं ।
 राज गुमावत वाणिया चाहते, राज राखण में वाणिया नहीं ॥
 रईयत राज की जड़ निकालसी, वाणिया लक्ष्मी राखसे नहीं ।
 पाखंड वेद की बात सुनावते, धरम की चाल में वाणिया नहीं ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, गुण की बात में वाणिया नहीं ।
 घर-घर वाणिये फंट पड़ाविया, और के संप में वाणिया नहीं ॥ 19 ॥

करोड़ों ही बात को नुकसान कर दियो, जगत भलाई में वाणिया नहीं ।
 वाणिया आपको अमल बढ़ावते और का अमल को चाहते नहीं ॥
 वाणिये कंचन पांव में पेहरियो, राज का कंचन राखसे नहीं ।
 वाणिया एक वे हड़ताल नाखते, राज को वाणिया गणते नहीं ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जादू को वाणिया खोलते नहीं ।
 मुख राज वे मेहल में बैठगे, ब्रह्म में राज को सुझता नहीं ॥ 20 ॥

दूध का कसोला बिल्ली को पाए दो, बिलाड़ी गोस्त को त्यागती नहीं ।
 लाख मेवा फल काग जीमाय दो, काग पलीती को खोलते नहीं ॥
 बगला को धरम वेद सुनाए दो, बगला मच्छियां त्यागते नहीं ।
 भडुरा को भोजन जीमाए दो, भडुरा पलीती खोलते नहीं ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, सर्प तो जेहर को त्यागते नहीं ।
 वाणिया को जादू डाकण मन्तर मारियो, पेहली तो छूटते नहीं ॥ 21 ॥

कोंटालो मारण रोग चलावियो, क्षत्रीय को वाणिया राखसे नहीं ।
 धन खेचण को काल चलाविया, धन खुटों पछे तेज भी नहीं ॥
 धान बोवे जब तीड़ बोलावते, खेती नहीं जब तीड़ भी नहीं ।
 मरियां पाड़ के जगत घटाविया, जमां टूटां पछे राज भी नहीं ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राक्षसी बहोत है कमती नहीं ।
 दानव दल को काम जमावते, राज टूटा पछे जोर भी नहीं ॥ 22 ॥

माता की जायोड़ी बेन को भोगवे, वाणिया सरीखा नीच भी नहीं ।
 देवर जठ भोजाईयों को भोगवे, वाणिया सरीखा दुष्ट भी नहीं ॥
 गोद को बेटा तो माता को भोगवे, वाणिया सरीखा नीच भी नहीं ।
 सगी भाणेजी को वाणिया भोगवे, वाणिया सरीखा दुष्ट भी नहीं ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, बाप बेटी को भी खोलते नहीं ।
 वाणिया भाणेज मासी को भोगवे, भतीजा काकी को खोलते नहीं ॥ 23 ॥

मामा का भाणेज मामी को भोगवे, वाणिया सरीखा नीच भी नहीं ।
 वाणिया की बेटी कुंवारी बेटा जणे, मुख देखण का धर्म भी नहीं ॥
 काकाजी होकर भतीजी को भोगवे, वाणिया सरीखा नीच भी नहीं ।
 रांडोली भोगवे गर्भ गिरावते, मुख देखण का धर्म भी नहीं ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, मांस दारु को भी खोलते नहीं ।
 वाणिये जाल जगत पे फेरियो, जगत भी धर्म में चालता नहीं ॥ 24 ॥

बेहनोवी होकर साली को भोगवे, वाणिया सरीखा दुष्ट भी नहीं ।
 बेटा की बहु ससुरो भोगवे, वाणिया सरीखा नीच भी नहीं ॥
 जमाई होकर सासु को भोगवे, वाणिया सरीखा दुष्ट भी नहीं ।
 मर्द के उपर मर्द चढ़ावते, वाणिया सरीखा जाली भी नहीं ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, वाणिया सरीखा हरामी नहीं ।
 ढेढणी साठणी वागरण फेर भी, वाणिया भंगण खोलते नहीं ॥ 25 ॥

साद जोगी होय वाणिया डोलते, वाणिया जात बतावते नहीं ।
 दूसरी जात का भेद को लेवते, आपका भेद को केवते नहीं ॥
 कंचन चांदी की रसाण बतावे, वाणिया ठगाई को खोलते नहीं ।
 रसाण मंत्र में जगत को नाखियो, हाथ में धूल भी आवती नहीं ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, झूठ की बात में कुछ भी नहीं ।
 राक्षसी वेद में जगत को खोवते, जगत भी ब्रह्म में समझता नहीं ॥ 26 ॥

भील मेणा ढेढ ब्याव करे जद, वाणिया दीपक होण देते नहीं ।
 माली तेली कुम्हार के ब्याव में, शराक दिवियां होण देते नहीं ॥
 दूसरा ब्याव में घोड़े चढे, जद वाणिया चढने देवते नहीं ।
 सर्वे ही लोक तो पीतल पहनते, चांदी को पहनने देवते नहीं ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, रईयत उपर वारस नहीं ।
 राक्षसी वाणिया धणी वे बैठगे, राज को रत्ती भर जाणते नहीं ॥ 27 ॥

वाणिया हरदम हराम करे जद, हराम की वार्ता कहने में आवे ।
 धर्म डुबोवण काल चलाविया, मुख से ज्ञान का गीत को गावे ॥
 ठेठ से पापी वे चौड़े सीधा चले, वाणिया राक्षस जात केवावे ।
 पाप चोरी झारी वाणिये चलाई, कुल की चाल वे नहीं गमावे ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जगत को तोड़ के जमा ले जावे ।
 सर्वे जातों तणों धर्म बिगाड़ियो, वाणिया राजा को राज गमावे ॥ 28 ॥

चोरियां झारियां वाणिया में घणी, नारियां देखी वे नपट मेली ।
 एक ने आदमी रांड करे जद, तीसरी तैयार वे उठे पहली ॥
 लोभ के वास्ते चोरी झारी करे, पैसा के वास्ते फोर मुंडी ।
 भली भी नारियां जगत बहोत है, वाणिया जात की रांड भूंडी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जगत को वाणिया नत लूटे ।
 एक ने आदमी रांड करे जद, सुनते ही तैयार वे सोले उठे

॥ 29 ॥

ब्याज कर वाड़िया धान के उपर, रोकड़ा उपर ब्याज भारी ।
 गुप्ती पापिया जगत में चोर है, जादू के जोर से जून मारी ॥
 लख चौरासी कुंडिया थापी, सर्व जीवां तणी होम तैयारी ।
 सर्वे ही वाणिया जम का दूत है, दोनों ही दीन से जात न्यारी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, समझ लो ब्रह्म में सरठ सारी ।
 बैल गऊआ अज्या भेड़ ऊंट, पांच बिन जगत को कौन तारी

॥ 30 ॥

पांच रत्नों सब जगत को तारियां, श्रीपंच तारियां सरठ चेती ।
 दरखतां देवता हेज कर तारियां, नहीं तो आत्मा कहां रहेती ॥
 पांचों ही सुन्दरी जगत की मात है, मानव रूप को दूध देती ।
 बैल भी जगत में काम सब देवता, फेर भी वावते अन्न खेती ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राज का ब्रह्म में बुद्ध रेती ॥
 धर्म को देख सुध-बुध से चालते, जगत की धूल वां क्यूं वेती

॥ 31 ॥

अन्न पाणी तणों जगत को आसरो, पांच रत्नों तणी मौज दारी ।
 सर्व जीवों के वो धरण को आसरो, तीन गुणों प्रकाश धारी ॥
 ऊँट घोड़ा और रासबा कुंजर, रुई ने ढाकली सरठ सारी ।
 दरखतां देवता हरिगुण देखलो, देखलो कुदरती अलखवाड़ी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, ब्रह्म में समझ लो नर नारी ।
 चौदह रतन का गुण को देख लो, कपट को तोड़ के खोल बारी

॥ 32 ॥

कर देरासर बम्ब को थापियां, लख चौरासी वे रगत कुंडी ।
 गुप्ती चोर सौदागर वाणिया, सर्व जीवां तणी होम मुंडी ॥
 सर्व जातो तणी फेर ली बुद्धि को, पृथ्वी पाप से बहोत बुंडी ।
 पृथ्वी को मुख रोग से बांधियों, जल बिना धरण की आई तुंडी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, वाणिये मांडली साफ भूंडी ।
 राज-प्रजा सब होम कर गालिया, सुरत का वारता देख उंडी ॥ 33 ॥

विष्णु धरम की बात को काटते, राक्षसी जैन की करत चोखी ।
 आद विष्णु कुल देव दर्शन भारी, ज्यां पर वाणिया सर्व दोखी ॥
 बोल मीठा परमोद लगायते, दूसरी जातों को धर्म गोखी ।
 कपट कर और की ओद को निकाल के, वाणिया आपको पंड पोखी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, वाणिये धर्म की नांव रोकी ।
 अन्न धन्न बीज अंबारी को ऐ ले गया, जगत के हाथ में फकत डोकी ॥ 34 ॥

मसूदी वाणिया जगत को लूटते, घुस की खावते नत शेली ।
 दो आनी फकत राज में देवते, आपका काम को करत पेली ॥
 राज का कमल उलटा हो गया, राज की अकल भी भई गेली ।
 कायत सरदार को पास नहीं रखते, राक्षसी वाणिया पास बेली ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, भेख भी भूलगा राख चेली ।
 राज जोगी पर नार को हेरते, धर्म को नाश कर लाज मेली ॥ 35 ॥

जगत का धन को वाणिया ले गया, राज भी हो गया साफ खाली ।
 हाथ से धरम को धूल में मेलियो, हराम की डोर कूं हाथ झाली ॥
 परणी पदमणी मेल में जोवती, बिगड़ी रांड को करत वाली ।
 राज की वारता जगत में होवती, अकल के उपर धूल डाली ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राज तो ओढली साफ राली ।
 खेत बिन नारियां जगत में डोलती, कर खवासण राज घाली ॥ 36 ॥

जगत को पाप में पुरगस नाखियो, राज पर नाखियो जाल मोटो ।
 वाणिये धरम को पोतरो पाड़ियो, जगत में आणियो पूर तोटो ॥
 रत्न की खाण को नाश कर डालियो, ज्ञान को कर दियो गपत गोटो ।
 रगत का कशोला देव पर चढ़ावते, नरपत जीमते मांस रोटो ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, विक्रम मांडियो बहोत खोटो ।
 कंचन थाल में मेक तांबा तणी, कुरब कूं कर दियो साफ छोटो ॥ 37 ॥

राक्षसी वाणिया राज में रेवते, धरम की वार्ता जद डूबी ।
 रोकड़ खजाने में काकरा उड़ता, राज में राखसी डांग तुंबी ॥
 राज क रसोड़े मांस का कसोला, शराब की खुराक में सुरत लुंबी ।
 राज क्षत्री धरम वाणिये गालियो, लाज मरजाद तो भई उभी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राज वदावण कुण सुबी ।
 राज का शेण मोय एक नहीं दिखते, राक्षसी राखियो नहीं खुबी ॥ 38 ॥

चौरासी वरण में झारियों चालती, झारी चलावत जात बांणा ।
 पाप जादू कर नाश कर डालियो, हाथ नहीं आवता अन्न दांणा ॥
 बंका क्षत्री नर लकड़िया काटते, जोड़ात बेचती नित छांणा ।
 धन खेंचण को राक्षसी वाणिया, राज में उड़सी इट पांणा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, कणवद रेवसी राज थाणा ।
 अकल बिना पाप से भूप डग जावसी, धर्म सूं रेवसी राज रांणा ॥ 39 ॥

कोई एक राजो की चाल नागो तणी, कोई एक राजो का ब्रह्म नागा ।
 करारों के संग हर दम रेवते, खास हजुरी में करार नागा ॥
 पर स्त्रीयों संग रंग रमावते, बुद्धि को फेरते करार नागा ।
 पर स्त्रीयों को वो ही बोलावते, लावणे वाला भी करार नागा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, फौजदारी मांही करार नागा ।
 हाकमी ऊपर करारों को भेजते, प्रधान थापिया करार नागा ॥ 40 ॥

राज हजुरी में सरदार रेवते, राज का रूपक बहेत रहता ।
 खास कचेरी में सरदार शोभते, राज तारण की बात कहता ॥
 तोषा खजाना की कूची सरदार पे, राज की रीत से वाट वेता ।
 जनांना डांडी पे चौकी सरदारों की, लाज मरजाद की बुध देता ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, चन्द्र का ध्यान में पाठ बेता ॥
 प्रधान हाकमी सिक्का सरदार का, गस्त में रेण की खबर लेता ॥ 41 ॥

अबे बंका सरदार की जड़ को कांटते, गुप्ती वाणिये घर कीधा ।
 राक्षसी वाणियों को घर देखाविया, जहेर का प्याला तो जरूर पीधा ॥
 होम जादू कर ब्रह्म को फेरिया, आत्मा रूप था बहोत सीधा ।
 सर्व जीवों पर जाल को फेरके, चमचे चमचे मार दीधा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जादू के जोर से जीव लीधा ।
 भवसागर में भूत खेलावते, जगत को कर दिया फिद फिदा ॥ 42 ॥

दिल में वार्ता राज सोची नहीं, जगत पीछे तो राक्षसी लागा ।
 घर-घर वाणिया खत झूठा मांडे, जगत को कर दिया साफ नागा ॥
 राज धणी ज्यां पर ब्याज वशी किया, इन्द्रजाल तणा फेर धागा ।
 जगत के उपर ब्याज नहीं लागता, राक्षसी वाणिया चोर जागा ॥
 सोनी हरचिन्द झुलणा केवते, लक्ष्मी अन्न बिना लोक भागा ।
 राक्षसी जाल में राजाओं को बांधिया, पांव मांडण को कहां मागा ॥ 43 ॥

पाप चोरी झारी जग में नहीं होती, वाणिये जादू से बुद्धि फेरी ।
 इन्द्रजाल को जगत पे फेरियों, अन्न पाणी माया सर्व घेरी ॥
 लक्ष्मी अन्न बिना तन भी टूटगा, माईत छोरुं लड़े तेरी या मेरी ।
 माईत सगा पे शस्त्र खेंचते, दूसरा मारता क्या देरी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, तोटा से वे गया जगत जहेरी ।
 शरायत सरदार में जहेर वाणिये कियो, भूप तो कर दिया भाई वेरी ॥ 44 ॥

वाणिये जादू से रोग चलाविया, जगत को दे दिया पूर धोखा ।
 पैसा कपड़ा बिना लाज जाती रही, पूर दुखी भवसागर लोका ॥
 पूर इन्द्रजाल पाप जादू कर, अन्न पाणी को भी साफ रोका ।
 अग्नि होम से भाण तपावते, अग्न का पवन कर पूर दोखा ॥
 सोनी हरिचन्द झूलणा केवते, सर्व जीवों पर काल जोखा ।
 कण वद पैसा लोक पैदा करे, जगत को कर दिया साफ खोखा ॥ 45 ॥

चार जुगां से वे होम चलाविया, जठा से उग्र साफ टूटी ।
 कच्ची उग्र में आत्मा तोड़ते, लक्ष्मी वाणिये साफ लूटी ॥
 लख चौरासी वे जीव होमावते, अन्न फल फूल की साख तूटी ।
 खेतिया कर कर मानवी टूट गये, हाथ नहीं आवता अन्न मूठी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, पाप से पृथ्वी की सिद्धि उठी ।
 होम जादू अब जाहिर होने लगा, वाणियो का पाप जरूर फूटी ॥ 46 ॥

होम जादू कर गऊ को मार ली, होम जादू से ही भैंस खूटी ।
 होम जादू कर मारली बकरियां, होम जादू से सिद्धि उठी ॥
 होम जादू कर बुद्धि को फेर ली, होम जादू से चोर लूटी ।
 होम जादू से मार ली जून को, होम जादू से लाज छूटी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, होम जादू से मन टूटी ।
 होम जादू से तलवारां चालती, होम जादू से शीश फूटी ॥ 47 ॥

होम जादू से झगड़ा होवता, होम जादू से काल जागे ।
 होम जादू से बिजली पाड़ते होम जादू से आग लागे ॥
 होम जादू से पृथ्वी धूजती, होम जादू से जल त्यागे ।
 होम जादू से ग्रहण भी होवता, होम जादू से नीपत भागे ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, होम जादू से होत नागे ।
 होम जादू से रांड घर भोगती, होम जादू से फिर आगे ॥ 48 ॥

होम जादू से गर्भ गिरावते, होम जादू से ब्रह्म चूके ।
 होम जादू से पर्वत फाटते, होम जादू से दर्द दुखे ॥
 होम जादू से जल में डूबते, होम जादू से जहेर बुके ।
 होम जादू से आप घाती होते, होम जादू से भूत कूके ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, होम जादू से दरखत सूखे ।
 होम जादू से सीतांग उठते, होम जादू से खून थूके

॥ 49 ॥

होम जादू से बाजंदी खेलते, होम जादू से ही धान खेंचे ।
 होम जादू से झाड़ उड़ावते, होम जादू से काल पहांचे ॥
 होम जादू से रिद्धि-सिद्धि खेंचते, होम जादू का वेद बांचे ।
 होम जादू से जोगी परचा देवते, होम जादू से प्रत सांचे ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, होम जादू से जम रांचे ।
 होम जादू से ग्रह लगावते, होम जादू से मरे खाय फांसे

॥ 50 ॥

होम जादू से ब्रह्म को भूल गये, होम जादू से ऐ काम होते ।
 होम जादू से सत भंग हो गया, होम जादू से फरत रोते ॥
 होम जादू से मन उड़ जात है, होम जादू से राज खोते ।
 होम जादू से हराम में रेवते, होम जादू से बूरी दृष्टि जोते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, होम जादू से पड़त गोते ।
 होम जादू से धर्म को भूल गये, होम जादू से नरक मोते

॥ 51 ॥

होम जादू से शीश को काटते, होम जादू से सांध लेते ।
 होम जादू से जोगी धरण में पेंठते, होम जादू से सिद्ध केते ॥
 होम जादू से वीर को साधते, होम जादू से अधर वेते ।
 होम जादू से प्राण को लेवते, होम जादू से मुआ फेर चेते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, होम जादू से धरब खेते ।
 होम जादू से लक्ष्मी खेंचते, होम जादू से कोयला भर देते

॥ 52 ॥

होम जादू से जल पे चालते, होम से रुप विराट धरते ।
 होम जादू से अलोप होते जोगी, होम से डोर आसमान चढते ॥
 होम जादू से कुएं पे सुवते, होम जादू से किसी का ए रुप करते ।
 होम जादू से शेर बन जावते, होम जादू से लोग डरते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, होम जादू से नहीं तरते ।
 होम जादू से राज भुलाविया, होम के धोखे मांय राज पड़ते ॥ 53 ॥

होम जादू से देव को थापते, होम जादू से धरण फाटे ।
 होम से तारा आसमान में टूटते, होम से मानवी बार वेटे ॥
 होम जादू से काल पड़ावते, होम से इन्द्र भी वरत माटे ।
 होम से पुरुष का पराक्रम टूटगा, होम से ज्यां-ज्यां ही पड़त घाटे ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, होम से लक्ष्मी साफ नाठी ।
 होम जादू से दया भी खुटगी, होम से जीव को जीव काटे ॥ 54 ॥

होम जादू से जाली ओगा चलावत, होम से गगन साड टोपी ।
 होम जादू से नगर पहाड़ उड़ावत, दूर दिरयाव में जाय जोपी ॥
 होम जादू से मण भर खावते, होम जादू से कार लोपी ।
 होम जादू से डाकण केवते, होम से बोलते फुर बोपी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राक्षसी जात पे राज कोपी ।
 गुप्ती चोरों की कतल उड़सी, नकलंग राव निशान रोपी ॥ 55 ॥

होम जादू से मांस कुं खावते, होम जादू से शराब पीते ।
 होम जादू से करामात डूबती, होम जादू से धन रीते ॥
 होम जादू से रोग चलाविया, निर्मल मानवी नहीं दीते ।
 होम जादू से ये विक्रम होवते, कणवद आदमी धर्म जीते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, होम से लक्ष्मी नत बीते ।
 होम जादू से ही फैल में भूल गये, कोई एक भूल गये बात गीते ॥ 56 ॥

होम का पाप से बुद्धियां बिगड़ गई, इसी वद जगत में काम होते ।
 वाणिये जादू का होम चलाविया, जगत को जड़ों से नित खोते ॥
 पैसा कपड़ा अन्न हाथ नहीं आवते, ब्रह्म के जाल में खात गोते ।
 मरणा मारणा चोरणा कूटणा, वे बुद्ध हो गया लोक बोते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राज भी ब्रह्म में नहीं जाते ।
 अन्न धन को भी चोर ले जाविया, हाथ नहीं आवते घास सोते ॥ 57 ॥

हिन्दू मुसलमान प्रीत से रेवता, सर्व जीवों की वे पाल करते ।
 वेद कुराण तो धर्म को चालते, कच्ची उम्र में नहीं मरते ॥
 राक्षसी चोर को नजर से देखता ही, उसी को मार के दूर धरते ।
 जद भेड़िया शेर तो भेले ही खेलते, वारंवार तो इन्द्र वरते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, दोनों ही दीन में जगन करते ।
 घर-घर लक्ष्मी करोड़ों की रेवती, वो लोग पाप से बहोत डरते ॥ 58 ॥

धर्म की बात को राजा भूल गये, राक्षसी वेद की बात झेली ।
 सर्व राजा मिल धर्म को धारसी, पापी को मार के दूर ठेली ॥
 जद संसार में सर्व सुख होवसी, राज प्रजा सब मौज खेली ।
 जद त्रिया सब सत में चालसी, पियु जीमावसी सर्व पहेली ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, काल अहंकार को दूर मेली ।
 आद क्षत्री धर्म राज सब झेलसी, मंगल गावसी सर्व चेली ॥ 59 ॥

राज का तेज अवतार ज्युं जाणते, जगत भी फेरते नित माला ।
 जगत को देख के राज सुख पावते, कंवर भी होवता धर्म वाला ॥
 जद सुरापण शरीर में रेवता, लोक भी केवते ब्रज वाला ।
 जद बोला जल पृथ्वी पीवती, पूरण चालता नदी नाला ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, खोल दे ब्रह्म का कपट ताला ।
 मूल दरखत को मध्य में जोयले, फूल फल देखले हरी डाला ॥ 60 ॥

पद्मणी संग में रीतसर खेलते, धर्म का न्याय में पूर रेते ।
 मानव पशु को पालते प्रेम से, जासक वरण को दान देते ॥
 शिकारी जीव को मारण दौड़ता, वो ही शिकारी को मार लेते ।
 पर त्रिया बेन बेटियां जाणते, घर त्रिया ऋतु दान देते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राज का काम तो यूं वेते ।
 हराम का काम से हेत नहीं राखते, उण कुं ओलबा कुण देते

॥61॥

देवता का नाम जगत में सही है, पत्थर की सेवना साफ झूठी ।
 आत्मा रूप की सेव को भूल गये, पत्थर की पूजा में काँई लूँटी ॥
 अग्नि बाल अन्न देव को होमते, देख हैवान की अकल खूटी ।
 अन्न जल आत्मा पालते ज्यां को, वे अगन में होमते भर मुट्ठी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, पाप का काम से वंश खूटी ।
 राक्षसी वेद में जगत को नाखियो, समझिया ब्रह्म की गांठ छूटी

॥62॥

भूत की साधना होम से करते, देव साधना नहीं होती ।
 बल बाकल तो भूतों को नाखते, देव तो हो गया सरूप ज्योति ॥
 ब्राह्मण पंडिता भूत ज्यूं जाणवा, जादू तणी ज्यारे हाथ पोथी ।
 जीव को मार अन्न देव को होमते हमरा की वार्ता सर्व थोथी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, समझलो ब्रह्म सर्व गोती ।
 पाप का मुख में जहर सब नीपजे, धर्म का मुख में रतन मोती

॥63॥

मंत्र साधना होम का खलका, वाणिये कर दिया जगत जहेरी ।
 राक्षसी वेद में जगत को नाखियो, सर्व जीवां तणो होम खुआरी ॥
 बकरा पाड़िया बांध ले जावते, देवता उपर जाय साड़ी ।
 पाप को जाल जगत पे नाखियो, राज की फौज भी यूं हारी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, आत्मा रूप को कौन तारी ।
 राज कचेरी में राक्षसी रेवते, गालियां गावती नफट नारी

॥64॥

राज का काम इसी वद होवता, सर्व जीवां पर करत छाया ।
 पूर कचेरी सरदारां की होवती, अरबां-खरबां तणी बहोत माया ॥
 नेकी हती जद रोग नहीं आवता, निर्मल रेवती सर्व काया ।
 राक्षसी वेद से होम चलाय के, पाप से जगत में काल लाया ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, भूख से जगत की पड़त काया ।
 होम जादू कर जगत को गालियो, राज के उपर अबे आया ॥ 65 ॥

करो उपाय ओ काम है जगत को, दल दरियाव में सुरत देणा ।
 अपने शरीर की सुध-बुध देखके, धर्म का खड़ग को हाथ लेणा ॥
 खलीता लिख रजवाड़ में भेज दो, धर्म का न्याव में एक वेणा ।
 काल अहंकार अगन में जाल दो, दोनों ही दीन से प्रीत देना ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, सर्व वद की बात कहना ।
 गम से देख वद चाल सूरा तणी, न्याव का इष्ट में पुष्ट रेणा ॥ 66 ॥

पृथ्वी की पैदा पा से उड़गी, दंड कमाई पे राज बैठे ।
 वे धरण कमाई फल नहीं देवती, राक्षसी जात के मांय पैठे ॥
 ऊंट घोड़ा बैल दान में आवता, रायका देवते गऊवो घेते ।
 मेवा अनाज का हासल आवता, मौज से पलंग पे राज लेते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राक्षसी पाप को राज मेटे ।
 तो घी गुड़ खांड मेवा और रोकड़, करोड़ों ही उपर दान पेटे ॥ 67 ॥

राज अवतार नहीं गुण अवतार है, गुण से राज को राम केते ।
 आदमी देव नहीं गुण है देवता, गुण से ज्योत प्रकाश वेते ॥
 स्त्री देव नहीं सतपणां गुणों का, गुणों से देवियां सुगत रेवते ।
 गुण से नबियो गुण पैगम्बर, गुण से जगत पीर सेते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, अवगुणी पुरुष को गुण देते ।
 गुण देता थकां भूत बणे तो, राक्षसी मूत का जाण लेते ॥ 68 ॥

अनोपदास गुरु पूर्ण मलिया, गुण का भेद बताय दीना ।
 सदा गुरुजी वो नकलंक स्वामीजी, अमर प्याला तो वहां पीधा ॥
 कर ॐकार उलट पवन को, ब्रह्म की ज्योत जगाय लीना ।
 गम के बादल बरसते प्रेम से, आपो ही आप अलख भीना ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, मुक्ति का पंथ है बहोत झीणा ।
 अनोपदास गुरु सतगुरु स्वामीजी, लोहसण का कंचन कीना

॥ 69 ॥

गुदा स्थान को जल से मांझ ले, खट चक्कर को साफ कीजे ।
 मास बारह तक अमरी साज ले, नल को नाभ तक धोय लीजे ॥
 चंद्र की नाड़ी में नीर को साड ले, भांण की नाड़ी में आहार कीजे ।
 सुखमणा नाड़ी में नाम विचार ले, नासका नेण सुरत में दीजे ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, वंक में उरद को खेंच लीजे ।
 श्रवण को दाब ले सुण ले घोर को, भजन की साधना यूं कीजे

॥ 70 ॥

काल अहंकार को अकल से ढाब ले, शील संतोष की मेल चौकी ।
 जब्या ज्वाला को उल्टी फेर ले, पवन को पीवणा नाल वंकी ॥
 पांचों की पारदी सकर में बंद, तरवणी तीर पर देख झांकी ।
 तन टंकोर गगन में सुन ले, दल का दुष्ट को दूर फैंकी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, उल्टा कूंप में डोर नाखी ।
 शीश अमीरस पायले क्यारियां, खेतियां नीपजे सर्व बांकी

॥ 71 ॥

मूल को बांध आसण चढायले, कर से दाब ले जाग तेरी ।
 अग्नि जल पवन तीन गुण को, नाभ स्थान में देख लहेरी ॥
 कर ॐकार अगम को साजले, तरवणी सुरत कर नुरत नेरी ।
 कुंभक साड रेचक में छोड़ दे, फेर भी कुंभक गाज गहरी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, देख लो दीपक क्या देरी ।
 पचरंग फूल की देख सुगंध को भवसागर की मेट फेरी

॥ 72 ॥

आहार को मार के इन्द्री जीत ले, ध्यान कर काम को जीत लेवा ।
 पवन प्रकाश के तत्व को जीत ले, उरद में देखले आई सेवा ॥
 द्वार को बंद कर तेज को जीत ले, श्वास उसास के माय रेवा ।
 ज्ञान के जोर से शरीर को जीत ले, सुक्ष्म जीमणा अन्न मेवा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, पूरण पुरुष का काई केवा ।
 पत्थर की सेव को तोड़ के फैंक दे, ब्रह्म में परस ले आप देवा ॥ 73 ॥

सोला को ध्यान कर जल को देख ले, बारह में देख ले धरण माता ।
 आठ को ध्यान कर पवन को देख ले, चार में देख ले अगन राता ॥
 सुखमणा ध्यान असमान में देखले, चंद्रमा भाण हर दम आता ।
 देख प्रकाश प्राण को खेंच ले, अन्दर बाहर एक दाता ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, रुप सरुप में करत बांता ।
 दशों ही द्वार में देख चेतन को, अणबे पद को आप गाता ॥ 74 ॥

भूख को मार के इद्रियां जीत ले, तरसा को मार के जीत ले दूजी ।
 नींद को मार के तीसरी जीत ले, भोग को मारिया ब्रह्म में सुझी ॥
 न्याव से बोलना खोल स्वाद को, जब्या की इन्द्री जीत ले पूंजी ।
 पांच इन्द्री जीत झूठ को खोल दे, ब्रह्म तो हो गया अमृत कूंजी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, बुद्धि का बाण से मार ले मुजी ।
 फेर मस्त रह धर्म की धीज के ऊपर, कबद को मारिया काल धूजी ॥ 75 ॥

कोई एक फरते पानरे-पानरे, कोई एक फरते डालम-डाल ।
 कोई एक बैठ गये, जड़ पकड़ के, कोई एक बैठ गये गोड़ नीयाल ॥
 कोई एक फूल फकर में डोलते, कोई एक लेवते फल को चार ।
 कोई एक हरदम धूप चढावते, कोई देवते जल की धार ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, देख लो बीजग दरखत तैयार ।
 फल-फूल पाती मूल डालियां से ही, पण सारा ही दरखत बीज की लार ॥ 76 ॥

दरखत बीज में बीज दरखत में, आगम वेगम देख लो दोई ।
 फल को जीमते बीज उगावते, जोग मरजाद को जाणते वोई ॥
 फल को खा लिया बीज भी खावते, ध्यान की रुखड़ी उसी ने खोई ।
 ध्यान का बीजग धरण पे बोय लो, भजन का दरखत फूल-फल होई ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, ब्रह्म की ज्योत जयाग लो कोई ।
 बीज खाया उगाव जाणे नहीं, बीज में हाड मांस चमड़ी लोही ॥ 77 ॥

ध्यान का बीजग सुरती जाणिये, सूरत बिन ध्यान भी होवता नहीं ।
 चेतन का बीज ब्रज को जाणिये, ब्रज का फेर भी चेतन होई ॥
 परदे भेख जो प्रगट जाणते, प्रगट भेख जो परदा तांही ।
 जल की बूंद की सीप पैदा हुई, फेर भी सीप रहे जल के मांही ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, आपका बीजग आप के मांही ।
 गुणों से देह बणी गुण भी देह में, देखलो दीदार जोवते कांई ॥ 78 ॥

पृथ्वी जल में जल पृथ्वी मांय, ब्रह्म विचार के कीजिये तोल ।
 आतम भांण में भांण आतम में, देखले सर भेद मुख से बोल ॥
 नारियां नर में नर नारी में, गर्भ विचार के अंतर खोल ।
 प्राण श्वास में श्वास प्राण में, जोयलो दिल में बजायो ढोल ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, भेद बिना सब दिसती पोल ।
 नेतर तेज में तेज नेतर में, देख लो अपार मोल अमोल ॥ 79 ॥

माला को समरण श्वास उसास को, अस्तुति समरण सत को काम ।
 भजन गावणा नेकी वदावणी, नहावणा, धोवणा आसार नाम ॥
 जंतर तंतर साधना मंतर, परचा होम तो जादू को काम ।
 अस्तुति समरण आचार भजन, चार में अलबत बोलते राम ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, कुण सी बात में दिखते श्याम ।
 जंतर मंतर परचा होम तो, धर्म के उपर पाप को खांभ ॥ 80 ॥

राजभारतीजी जोग सिद्धि मांय, बीजग आद का नाम बताया ।
 मानभारतीजी ध्यान किया जद, तंत वचन का तार देखाया ॥
 मंगलपुरी गुरु प्रेम किया जद, आतम मंजन प्याला पाया ।
 कसनदासजी कलप सिद्ध जोगी, काल घोड़े पर शील चढ़ाया ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, सिद्ध चारो माहे संग रमाया ।
 अनोपदास धरम हेलो दियो जद, शीश नमाय के गुरु ठहराया ॥ 81 ॥

आद उँकार के राजगर ब्राह्मण, आद उँकार के मुसलमान ।
 विष्णु राज भी आद उँकार के, आद उँकार के तीनों ही खाण ॥
 नवाजी ध्यान भी आद उँकार से, आद उँकार से अन्न का दान ।
 नरसिंह अवतार जपिया उँकार, उँकार जपिया गोकुल कान ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राम लक्ष्मण उँकार को ध्यान ।
 राक्षसी वाणिया जहेर की वेलड़ी, जादू से जग मारण की श्यान ॥ 82 ॥

नर अवतार है नर भी देवता, नर भी भक्त वे सिद्ध सूर ।
 नर गुरुदेव है नर भी साधक, नर भी चेला वे संत पूरा ॥
 नर उस्ताद है नर भी हुनरी, नर बजावत शंख तूरा ।
 नर भी पंडित नर विद्यावान, नर साचा बोला नर भी कूरा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, नर काला गोरा नर भी भूरा ।
 सर्वे ही काम तो नर बणावते, राम पे देवे सो नर अधूरा ॥ 83 ॥

कंचन चांदी तो मानवी घड़ते, पेरणे वाले भी मानवी होते ।
 मोती के पाक तो मानवी करते, तार में मोती को मानवी पोवते ॥
 रामत खेलण मानवी बनावते, ख्याल में आय के मानवी जोते ।
 ऊँट घोड़ा बैल मानवी फेरते, अज्या गौआं भैंस मानवी दोते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, नींद आवे जद मानवी सोते ।
 सर्वे ही काम तो मानवी बनावते, राम पे देवे सो वचन खोते ॥ 84 ॥

मसाण जगावण मानवी दौड़ते, भूत को वश में मानवी करते ।
 साधना मंतर मानवी करते, बल बाकल ले मानवी धरते ॥
 मंतर धूल को मानवी नाखते, काल अहंकार से मानवी मरते ।
 जादू के जोर से काल उड़ावते, तेरी मेरी कर मानवी लड़ते ॥
 सोनी हरिचन्द्र झुलणा केवते, धर्म का मानवी पाप से डरते ।
 सर्वे ही काम तो मानवी बनावते, राम पे देवे सो झूठे ही फरते ॥ 85 ॥

राज करंता मानवी देख लो, नौकर चाकर मानवी दीशे ।
 राज रसोड़ा को मानवी पकावे, धान साफ कर मानवी पीसे ॥
 लाडु पेड़ा घेवर मानवी बणावते, सर्वे ही मेलते दुकान बिचे ।
 सौदा लेवण को मानवी दौड़ते, कोई एक मानवी हाथ को भींचे ॥
 सोनी हरिचन्द्र झुलणा केवते, मानवी अवसर मानवी नीचे ।
 सर्वे ही काम तो मानवी बनावते, राम पे देवे सो झूठ को घीसे ॥ 86 ॥

बेटा का बाप भी मानवी देख लो, बेटी का बाप भी मानवी जाणो ।
 ब्याव शादी भी मानवी करते, मानवी त्रिया को मेलते आणो ॥
 भावता भोजन मानवी बनावते, मानवी करते जगन टाणो ।
 बोझ उठावण मानवी दौड़ते, मानवी लावते लाकड़ी छाणो ॥
 सोनी हरिचन्द्र झुलणा केवते, मानवी करते हाकमी थाणो ।
 सर्वे ही काम तो मानवी बनावते, राम पे देवे सो झूठ को दाणो ॥ 87 ॥

वेद कुराण तो मानवी लिखते, देव द्वारा को भी मानवी थापे ।
 भीख जासण को मानवी आवते, कपड़ा अन्न ले मानवी आपे ॥
 खेतियां वाड़िया मानवी वावते, लकड़ी दरखत मानवी कापे ।
 मरदंग ताल बजावत मानवी, तपसी होकर मानवी तापे ॥
 सोनी हरिचन्द्र झुलणा केवते, मानवी के पेट मानवी व्यापे ।
 सर्वे ही काम तो मानवी बनावते, राम पे देवे सो झूठ को बाफे ॥ 88 ॥

कपड़ा बनावते मानवी देख लो, मानवी बनावते तार भी गोटा ।
 सीवना पहेरना मानवी बनावते, मानवी बनावते थालियां लोटा ॥
 वोई थाली में मानवी जीमते, मानवी परोसते दाल भी रोटा ।
 घोड़े के उपर मानवी चढ़ते, हस्ती पे चढ़ते मानवी मोटा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, फकीर मानवी हाथ में घोटा ।
 सर्वे ही काम तो मानवी बनावते, राम पे देवे सो बुद्धि का छोटा ॥ 89 ॥

शस्त्र बंदुकों मानवी बनावते, ढाल तलवार को मानवी बांधे ।
 रण लड़ाई पे मानवी दौड़ते, मानवी बंदुक मांडते खांधे ॥
 बनी बात को मानवी तोड़ते, टुटोड़ी बात के मानवी सांधे ।
 चोरियां झारियां मानवी करते, मानवी चोर को डोर से बांधे ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, सर्व रसोड़ा को मानवी रांधे ।
 सर्वे ही काम तो मानवी बनावते, राम पे देवे सो ब्रह्म के आंधे ॥ 90 ॥

पेटियां गाड़ियां मानवी बनावते, सर्वे धातु को भी मानवी कूटे ।
 लेवणा देवणा मानवी करते, वेत चूके जद मानवी टूटे ॥
 मानवी का धर्म मानवी तोड़ते, मानवी जगत में इज्जत उठे ।
 मानवी धन की धूल उड़ावते, मानवी का धन मानवी लूटे ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, मानवी अगाड़ी मानवी पूठे ।
 सर्वे ही काम तो मानवी बनावते, राम पे देवे सो ब्रह्म के फुटे ॥ 91 ॥

गऊ मारन को मानवी दौड़ते, गऊ का मांस को मानवी खावे ।
 अज्या भेड़ी भैंस मानवी मारते, मांस को तोड़ के घर पर लावे ॥
 मानवी शिकार मच्छियां मारते, फेर भी मानवी गीत को गावे ।
 सुर भडुरा को मानवी मारते, मुओड़ा हाड़ को मानवी चावे ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, ऊँट घोड़ा मुआ मानवी पावे ।
 सर्वे ही काम तो मानवी बनावते, हराम का मुत वे राम बतावे ॥ 92 ॥

करोड़ो ही काम तो मानवी करते, राम को करते किसने देखा ।
 राम अवतार तो मानवी दीसते, ब्रह्म में तोल के कीजिए लेखा ॥
 ब्रह्म के जाल में वाणिये नाखिया, ब्राह्मण देखते हाथ की रेखा ।
 गेबाऊ राम को वेम चलावियो, दोनों ही दीन में झूठ को फेंका ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, धर्म भुलाय के पाप में टेका ।
 अवली गत में जगत को नाखियो, धरणी पे शीश असमान में ढेका ॥ 93 ॥

अवली गत हिरणाकुश चालतो, धर्म का काम पे रेवता खारा ।
 भक्त प्रह्लाद तो धर्म पे चालते, पिता ने प्रह्लाद को कुए में डाला ॥
 धर्म की नीत में मानवी रेवते, उसी ने कुए से बाहर निकाला ।
 फेर हरणाकुशे नजर से देखा, खांडे से मारना बात विचारा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, नरसिंह राज वां सुनी पुकारा ।
 पिंजरे में से सिंह को निकलके, सिंह ने असुर को चीर मारा ॥ 94 ॥

रावण की बुद्धि को वाणिये फेर दी, होम जादू का वो काम चलातो ।
 धर्म का नाम की जड़ को काटतो, पाप के काम पे दौड़ के जातो ॥
 पृथ्वी पेट में काल पड़ावतो, हरदम उठ के गऊ मरावतो ।
 देवता सती को कष्ट देतो, पूर दिल में रहेवतो मस्त मातो ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जीव मराय के नीत होमावतो ।
 जद राम लक्ष्मण तो फौज चढ़ाय के, मार रावण को काड़ियो खातो ॥ 95 ॥

कौरवों के घर कामेती वाणिया, कौरवों ऊपर फेरियो जाल ।
 पांडव देवों से खार पड़ाविया, कौरवों के घर घालियो काल ॥
 पांडव धर्म की नीत में चालते, कौरव तोड़ते धर्म की पाल ।
 ज्यां दिन वाणिये काल पड़ाविया, करोड़ों ही मारिया जवान बाल ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, हाथ नहीं आवती सुन के दाल ।
 कर महाभारत दल कटाविया, जद चलाया था खून का खाल ॥ 96 ॥

अग्रसेन राजा की राणी बाग में गई, वाणिये मेलियो कपट को जोग ।
 पतिव्रता तणों धर्म बिगाड़ियो, उण से कर लिया जोर से भोग ॥
 राक्षसी बीज को कंस जन्मियो, ब्रज में वाणिये घालियो रोग ।
 हरदम शहर का बालक मारतो, घर-घर रोवणा कर दिया सोग ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, बहोत दुखी थे ब्रज के लोग ।
 कोपियां कृष्ण कंस पछाडियो, जगत दियो अवतार अबोग ॥ 97 ॥

कर जादू राजा परीक्षित मारिया, ठेठ से वाणिया करते काम ।
 वाणियो जोगी वे श्राप को दे दियो, परगट धरायो कलंकी नाम ॥
 वाणियो राम वे आयो धोलेगढ, हरिचन्द राजा को खोलायो गाम ।
 शनिचर वे राजा विक्रम छल कियो, जद डुबोयो उजांणी को धाम ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जादू से राक्षसी बनते श्याम ।
 चंदन राजा को शहर बिगाड़ियो, पास नहीं राखियो पैसो दाम ॥ 98 ॥

वाणिया बामण दोनों ही एक वे, जादू का वेद को हाथ लीधा ।
 जयपुर राजा को नाम लगाय के, पास्ता ऊपर होम कीधा ॥
 दलेसर पास्ता गादी पीरांतणी, होम जादू कर मार दीधा ।
 राक्षसी वाणिया काफिर वाजते, रक्त का प्याला तो वाणिये पीधा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, चौड़े तो दिखते साफ सीधा ।
 दाना राजा सब होम कर मारिया, जगत का धन को हेर लीधा ॥ 99 ॥

चतुर राजा तो दिल में सोच के, ठेठ से देखसी न्याव को तोल ।
 आंधा के पास तो परियां नचाय दो, बोला के पास तो फोड़ दो ढोल ॥
 नागा राजा जको आंधा ज्यूं जाणिये, लोभी राजा जको बोला के तोल ।
 आत्मा रूप की दया नहीं जाणते, वो तो राजा पछे थूल के मोल ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, धरमी तो काड़सी न्याव का बोल ।
 पाप हराम को दिल से फैंक दो, धर्म की पेटियां लीजिये खोल ॥ 100 ॥

बोहत्तर खानजी सर्व राजेश्वर, अंग्रेजां न्याव सुनिये बात ।
 हिन्दू-मुसलमान प्रीत से रेवणा, रेवणा प्रीत से सर्वे ही न्यात ॥
 राक्षसी वाणिये जुग डुबोवियो, हर दम वाणिया करते घात ।
 सर्व जातों तणो धर्म बिगाड़ियो, सर्व बिगाड़िया तरवर पात ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, धर्म का न्याव लीजिये हाथ ।
 वाणिये जाल जगत पे फेरियो, जगत को दिखती दिन की रात ॥ 101 ॥

नगर सिरौही महाराव केशरसिंह, अरबगढ के नाथ सवाए ।
 गादी संभूतणी देव दर्शन भारी, संत फकीर वहां मंगल गाए ॥
 नौपत और पकावल मर्दंग, और गवैया भी वेण बजाए ।
 कुंवर महाराज तो सरूपसिंह, बड़े सिद्धि सुरापण महागुण पाए ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, शंकर द्वार पे दर्शन आए ।
 दीपक धूप कपूर की आरती, केशर चंदन मुकट चढाए ॥ 102 ॥

राणा हिन्दूपत भांण कला ज्यांकी, एक लिंगनाथ के इष्टधारी ।
 चस्का चितौड़ का नगर उदयपुर, राणा फतेहसिंह बहोत भारी ॥
 ज्यां कोतल कुंजर पूर रसाला, ज्यां एकलिंग नाथ की कर तैयारी ।
 ज्यां श्रीयादार घरे निशान वां, फूल रही जैसे गल क्यारी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, दर्शन आवत नर नारी ।
 सेल खुशी कर महेल पधारे, ज्यां चले हवायां वे तोप सारी ॥ 103 ॥

नगर जयपुर गादी रामचन्द्र तणी, आतम पाल माधुसिंह केहते ।
 राज हिन्दूपत सदा सुरापण, असुर लड़ाई पे मान गेते ॥
 हवा खेलने को माधु पधारे, ज्यां गज घोड़ा बेलों संग रहते ।
 संत फकीर वां जासक वरण को, कड़ा मोती अन्न दान देते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, बाग भारी फल फूल वेते ।
 सुआ पक्षी वन्नर मोर कबूतर, पशु जीमण की खबर लेते ॥ 104 ॥

जोधाणनाथ वे सिरदारसिंहजी, नवकोटी के महाराज धणी ।
 ईष्ट नरसिंग अवतार को जाणिये, मेड़तीआ बोली फौल घणी ॥
 ज्यां नौपत घरे पकालव मर्दग, और बजावत नागफणी ।
 ज्यां गज घोड़ा बहोत और अंबारिया, जड़ाणि झूल पे हीरकणी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, मंगल गावत पदमणी ।
 राक्षसी जात की कथल उड़सी, जद राजाओं के तो मौज बणी ॥ 105 ॥

नगर बिकानेर राजा गंगासिंह, न्याव के वद में बहोत भारी ।
 ईष्ट नरसिंग अवतार को जाणिये, कृष्ण अवतार की सेव तैयारी ॥
 ज्यां की कचेरी में जस कवि कृत, नगर में गावत नर नारी ।
 ज्यां गज घोड़ा बहोत सर्व बाजां बजे, सर्व शोभा घणी फूलवारी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राज हिन्दूपत न्याव धारी ।
 बहोत सत्य का काम ज्यां, सदा सुरापण ज्ञानकला सभी गुण कारी ॥ 106 ॥

आद विष्णु धर्म अग्रवाल मोदी, आद विष्णु धर्म वेद को आणे ।
 आद विष्णु धर्म भोजन पकावे, आद विष्णु वे संत को आणे ॥
 आद विष्णु धर्म ब्याव को थापते, आद विष्णु धर्म राज रीत को मांणे ।
 आद विष्णु धर्म अग्रवाल मोदी, आद विष्णु धर्म नाम वखाणे ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, आद विष्णु धर्म जल को छाणे ।
 आद विष्णु धर्म संत साधु को, धर्म पैसा बांट जीमते भाणे ॥ 107 ॥

नगर सिरौही गुणी हरिचन्द सोनी, वे माता रुपा तणा दूध धाया ।
 किसनाजी दादा पिता रामजी, व दादी राधा रुखमणी पाया ॥
 बहन चम्पाबाई केसरी, कुसाली व कंकू चारो माथे गुरु छाया ।
 भाई चुन्नीलाल वंश काला, सती कुटूम्ब का मंगल गाया ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, विक्रम काम से नर दाया ।
 मामा खुमाजी वो गौत मंडोरा, ज्यां अंतर सोच आतम धाया ॥ 108 ॥

भूल पड़ी जद भेख को पैरते, भेख लेवण का कांई था काम ।
 माता पिता का तो वंश बगाड़िया, राज का हांसल गमाया दाम ॥
 जगत के ऊपर रोटियां खावते, जाल सिखाय के डुबावते गाम ।
 पाप चोरी झारी झूठ को छोड़े तो, गृहस्थी पणा में दिखते राम ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, चेलियां मुंड के लगाया डाम ।
 पास्ता राजां में भूल पड़ी जद, राक्षसी वाणिये बनाया धाम ॥ 109 ॥

जाल बढाने को भेख चलाविया, जात छिपाय के पेरिया भेख ।
 छत्तीस वरण में वाणिया भेख ले, आद धर्म की भुलाई टेक ॥
 जती संपे की वे ढुंढिया होय के, जादू को चलाते बतावते लेख ।
 वैराग पंथ में वाणिया पैटगा, कूष्ठोंन हो गया सूरत से देख ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, आखिर वाणिया होवसी एक ।
 मुसलमान भी वाणिया हो गया, कोई एक सैयद कोई एक शेख ॥ 110 ॥

रैयत राज को वाणिया भेद ले, वाणिये चलायो गुप्ती पाप ।
 नीपत हठाई लक्ष्मी खेच के, जगत को वाणिये डुबोयो साफ ॥
 रैयत राज को तेज हटावियो, वाणिया हो गया आपोई आप ।
 ईन्द्रजाल को जगत पे फेरियो, जीव होमावते जादू का जाप ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जगत पे नाखियो काल को ताप ।
 पाणी को बांध के मार ली जान को, जगत को नहीं मिले रोटियां धाप ॥ 111 ॥

पृथ्वी ऊपर भेख हता नहीं, राक्षसी वाणिये चलाया कार ।
 गुप्ती होणे को भेख चलाया, राक्षसी वाणिये बंधाया द्वार ॥
 दूसरी बातों को जाल सिखाय के, लाखों ही कर दिया भेख में तैयार ।
 जात बुझे सब साच नहीं बोलते, झूठ चलावते अपरम पार ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जगत की खोस के मुंडते नार ।
 कई तरह सुं वो जगत डुबोवियो, जिनकी नहीं है बुम के वार ॥ 112 ॥

लाखों ही मानवी कैद में मरते, लाखों ही मरते उठ के रोग ।
 लाखों ही दरियाओं पार निकालते, लाखों ही पेरियां लंगोट जोग ॥
 लाखों ही पांगला आंधला कर दिया, लाखों ही कर दिया कुष्टान लोग ।
 लाखों ही हिजड़ा कोढ़िया कर दिया, करोड़ों ही मिल गया भूख से भोग ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, हर दम डूबती नहीं है शौक ।
 रैयत तोड़ के राज को गालते, राम के ऊपर देते अबोग ॥ 113 ॥

राम ने किसी का तो नुकसान न कर दिया, राम ने किसी का न खोसिया धन ।
 राम तो सर्वे ही आत्मा पालते, पृथ्वी सर्व को पूरती अन्न ॥
 राक्षसी वाणिये जाल चलाय के, जादू से डुबोया जगत का मन ।
 भेद जाणे नहीं भूख से मरते, दोराई मानवी काडते दन ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, दरखत गालिया कर दिया रण ।
 पानी आता बहोत दरखत फूलता, पानी को बांध के घटाया अन्न ॥ 114 ॥

जोगी भूला हुआ तपस्या करते, राज करण के तांहि ।
 राणी के बीज तो राजा बोवे, सोई जीव है बीजग मांही ॥
 बीज में जीव सो ही बीजग उगता, इण में जोगी का कांही ।
 घोड़ा का घोड़ा वे ऊंट का ऊंट वे, कोई जोगी तो आता नहीं ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जीव बीजग में तोत भी वहीं ।
 साद जोगी खाली तपस्या करते, गेहूँ का गेहूँ वे जव भी जाही ॥ 115 ॥

अपणा-अपणा बीज उगता, बीज का बदला होवता नहीं ।
 मानवी का बीज वाणिये डुबोविया, किसी का बीज वे किसी के मांही ॥
 जद पारस बीजग हक जाता रहा, राक्षसों का बीज सत में नहीं ।
 दूजां की स्त्री राक्षस भोगवे, सोई वो बीज है लड़का मांही ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, किसी का भला वो होण देते नहीं ।
 जादू से त्रिया का ब्रह्म डुबोविया, पति की आशा सो ही पंड के मांही ॥ 116 ॥

पीरां के नाम का जादू बणाय के, मुसलमानों के दे दिया हाथ ।
 विष्णु देवों का जादू बणाया के, हिन्दूओं के ऊपर कर दी घात ॥
 दोनों ही दीन का जादू बणाविया, दोनों को दिखती ज्ञान की बात ।
 मंत्र आहुति साधना करके, दोनों ही दीन में डुबोई जात ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, हाथ नहीं आवते सुन के भात ।
 नवाजी ध्यान से नूर को देखते, ए गुरुज्ञान है आद की बात ॥ 117 ॥

वो ही पृथ्वी अगाड़ी दिखती, वो ही पृथ्वी आज भी दीखे ।
 वो ही मेवा फल मीठा ही होवता, वो ही मेवा फल लागते फीके ॥
 वो ही इन्द्र पाणी बोला ही वरसता, वो ही मानवी जल बिना झीके ।
 वो ही नारी नर धर्म को सिखते, वो ही नारी नर हराम को सीखे ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, लक्ष्मी ले गया नहीं है कीके ।
 राज प्रजा का तेज हटाविया, अगाड़ी राज भी होवते तीके ॥ 118 ॥

जम का राज को वाणिये थापियो, हजारों कोस तो जहां से दूर ।
 जमपुरी है वांही नरक बणावियो, जीवों का पाप वहां होत है पूर ॥
 पृथ्वी नाम का पाप करावते, वहां से जगत में उड़ती घूड़ ।
 जीवों के नाम का होम करावते, किसी के जगत में नहीं है नूर ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, वारता कहत हूँ पुरम पूर ।
 इसी न्याव को राज नहीं झेलते, जगत की होवती झूरम झूर ॥ 119 ॥

वहां के पाप से जोगणी चलावते, वहां के पाप से चलावते वीर ।
 मेलड़ी झोपड़ी वहां से चलावते, सर्व रहते वे चौरासी तीर ॥
 वहां के पाप से जम चलावते, गुप्ती मारते गरीब अमीर ।
 वहां के पाप से ग्रह लगावते, समझ लीजिये राज गंभीर ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, वहां से बंधते है इन्द्र नीर ।
 रोग दोखा सब वहां से चलावते, राज भी बैठ गये पकड़ के धीर ॥ 120 ॥

मांकल पीर भी वहां से चलावते, वहां से चलावते चुडेला जंद ।
 वहां के पाप से डाकण थाप ली, जगत में कर दियो वाणिये फंद ॥
 सर्व बिमारी भी वहां से चलावते, पृथ्वी पेट में हो गयी गंध ।
 देवता का नाम का होम करावते, खर्च को भेजते वाणिया जंद ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, वहां के पाप से घटाया चंद ।
 करतबी टीपणा वहां के चालते, पाणी भी होवता वहां से बंद ॥ 121 ॥

पंडित साधु को राज भी पूछ लो, काय से पड़ते है जगत में काल ।
 रोग दोखा सब काय से उठते, काय से मरते है जवान बाल ॥
 आंधा बोला लुला काय से होवता, क्यूं नहीं उगते शीश पर बाल ।
 सोच लो पृथ्वी काय से धूजती, काय से उठती है शशीर में झाल ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, नेतर खोल के ब्रह्म में भाल ।
 खान राजेश्वर अंग्रेज सोच लो, पृथ्वी पेट में कांई है जाल ॥ 122 ॥

होम का पाप से ब्रह्म दबाविया, किसी का ब्रह्म भी जागता नांही ।
 झगड़ा तोटा मांही जगत को नाखियो, फीकर घाल दी ब्रह्म के मांही ॥
 वांनर डोर ज्यूं जगत को खेलावते, उन्दा सुझावते कांही का कांही ।
 इसी रीती से राजो को बांधिया, राजो को भी नहीं सुझता सांई ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, ब्रह्म को बांधिया होम वे जांही ।
 सर्व जीवों पर आहुतियां लागती, सुरत को दीजिये चौरासी वांही ॥ 123 ॥

ओगण साएठा वर्ष का झुलणा, महासुद पंचमी संवत् लगाया ।
 अनोपदास गुरु नकलंक स्वामी जी, धर्म का भेद तो वां ही बताया ॥
 अनोपदास गुरु जीवों के वारसी, सुतोड़ा ब्रह्म को वांही जगाया ।
 अकल कला ज्यां का ब्रह्म अवतार का, ज्यां का की चरण में शीश नमाया ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, हमारां कलंक तो वां ही मिटाया ।
 खान राजेश्वर अंग्रेज बहादुर, धर्म का न्याव में वदो सवाया ॥ 124 ॥

सदा गुरुजी को शीश नमावसुं, नकलंग स्वामीजी अनोपदास ।
 सर्व राजो को मैं शीश नमावसुं, बोयत्तर खान को सलामी खास ॥
 अंग्रेज बहादुर को सदा सलामियां, धर्म की माला तो बारोई मास ।
 रामेईराम तो धर्म का पुरुष को, सर्व सिद्धी का मैं रहत हूँ दास ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, गुरुजी बतायो धर्म का साच ।
 रतन चौदेह जगत को पालते, उसी का समरण हरदम पास ॥ 125 ॥

एक तो रतन अग्नि जाणिये, दूसरो रतन जन की माया ।
 सर्व की माता तो पृथ्वी जाणिये, चौथा रतन अन्न सवाया ॥
 पांचमा रतन दरखत देखलो, रतन रुई से जगत ढकाया ।
 गरु भैंसा फेर ऊंटणी घेटियां, बकरियां जगत को दूध पिलाया ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, हस्तणी घोड़िया बोझ उठाया ।
 रासबा बैल भी बोझ ले चालते, राक्षसे रत्नों का गुण भुलाया ॥ 126 ॥

देव अवतार भव सागर घूम के, चौदेही रतन का गुण लीदा ।
 अज्या गरुआं भैंस भेड़िया दोय के, दूध जमाए वलोणा कीदा ॥
 दूध दही छाछ माखण घी जीम के, अमृत का कुंभ नाम दीदा ।
 जहेर का कुंभ तो राक्षसी वाणियां, दानव जहेही को दूर कीदा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, देवता राक्षसों आद खेदा ।
 गज घोड़ा ऊंट पीठ बैठाय के, वाट में चालते बहोत सीदा ॥ 127 ॥

रतन से जगत में लक्ष्मी रेवती, रतन से जगत में रूप भी सारा ।
 ज्यूं-ज्यूं रतन की ज्योत को तोड़ते ज्यूं-ज्यूं ही जगत में घोर अंधारा ॥
 वाणिया राज घटावणा चावते, वाणों का चावते नत वधारा ।
 राक्षसी कुल का वाणिया वाजते, ठेठ से राक्षसी राज पे खारा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, गावणा पंथ भी ठेठ से न्यारा ।
 गुप्ती होम कर जगत को गालियो, पृथ्वी रोग कर जून को मारा ॥ 128 ॥

अनोपदासजी को पूर कलपाविया, लख चौरासी कुंडिया माथे ।
 करणी का जोर से छूट के आविया, देव गुणी नहीं आया वे हाथे ॥
 वकमी नदियां पहाड़ दरियाव घणा, वकमी जगहा में कोई न जाते ।
 वहां पर वाणिया खर्च को भेजते, हरदम लाखों ही जीव मरावते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, रगत की कुंडिया वांही भरावते ।
 वहां के पाप से पृथ्वी डुबती, लख चौरासी वे जून कलपावते ॥ 129 ॥

जून कलपावती सनमुख देख के, अनोपदास जी वे आप कलपांणा ।
 पूर कलपीज के जगत में हेलो दिया, राज गमावसी जात वांणा ॥
 जादू के जोर से फेल उठावते, मांही-मांही मारते तीर वांणा ।
 ठेठ से वाणिये राजो को गालिया, फेर भी गालसी राज थांणा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राज नहीं दिखते तेज दांणा ।
 जादू से राज की बुद्धि बिगाड़ दी, सर्व खाणे लगा मांस का खांणा ॥ 130 ॥

समझीया राज का कारज होवसी, समझीया राज का वदसी तेज ।
 समझीया कलु का नाश हो जायेगा, समझीया राज में आवसी तेज ॥
 समझीया शरीर को सर्व सुख होवसी, समझीया पोढ़ना ढाल के मेज ।
 समझीया पाप का फंद भी छूटसी, समझीया धर्म पे उपजी हेज ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, खलीता राजो को दीजिये भेज ।
 हिन्दू मुसलमान प्रीत से रेवणा, समझ लो सठ नहीं कीजिये जेज ॥ 131 ॥

लख चौरासी कुंडिया टूटसी, पृथ्वी के शरीर आवसी जोर ।
 बाग बगीचा वे और मेवा घणा, पक्षिया मीठा ई बोसली मोर ॥
 घर-घर लक्ष्मी बहोत हो जावसी, मारिया जावसी गुप्ती चोर ।
 सबका ब्रह्म भी साफ हो जावसी, हेलो दियो तकों आवसी दोर ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, डगती दिखती राज की कोर ।
 ब्रह्म से जोर कर डर नहीं किसी का, जगत का न्याव को कीजिये तोर ॥ 132 ॥

होम का पाप सूं वंश बिगाड़िया, जात ही जात को खांण लागी ।
 सगा की जड़ तो सगा ही काटते, लाज मरजाद सोई प्रीत भागी ॥
 नर लड़े जेते नारियां उठती, मुख से बोलती साफ नागी ।
 जगत की काण को राज नहीं जाणते, राज की काण को जगत त्यागी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, समझ लो ब्रह्म में वात सागी ।
 जाल से मानवी माई-माई मरते, बुराइयां करण में सुरत लागी ॥ 133 ॥

राज का हुकम इस द्विप के राज हो, राज ही जगत की जात को थापी ।
 राज ही न्याव कर धर्म को ध्यावते, आद से धर्म की वार्ता छापी ॥
 राज ही जगत का जाल को तोड़ते, राज का ब्रह्म में धर्मता व्यापी ।
 राज दया धर्म सत चलावते, राक्षसे धर्म की जड़ को कापी ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राक्षसी वाणिये ठेठ से कापी ।
 बरदधारी कोई जाल को तोड़ के, रोटियां जीमसी पेट में धापी ॥ 134 ॥

राज ही जगत का शंभ हो आद से, राज वाजते जगत का वारु ।
 सतजुग नाम को राज चलावते, सर्व जीवां तणा राज ही तारु ॥
 राज क्षत्रीय धर्म ब्रह्म आचार थे, राज नहीं खावते मांस के दारु ।
 राज ही वेद धर्म ईष्ट को जाणते, राक्षसी जात पे राज ही खारु ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, वाणिया पाप हराम का भारु ।
 सर्व जीवों तणों थल उठावियो, हम तो कूकते सत के सारु ॥ 135 ॥

लाज मरजाद को राज चलावते, राज ही टूटोड़ी नाव को सांदो ।
 राज ही हरदम हरिगुण गावते, पृथ्वी माता को हरदम वांदो ॥
 न्याव दया नाम तीन को झेल के, राज ही न्याव कर चोर को बांधो ।
 अन्न धन्न सिद्धी को सर्व उठावी, कोई के दीसतो रोटियां कांदो ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, पैसा बिना मानवी दीसते मांदो ।
 वार्ता किया सूं काई नहीं समझे तो, भीतर बाहर दोय तरफ आंधो ॥ 136 ॥

इसी शरीर से अवतार वाजते, ब्रह्म का भूलोड़ा वाजते भूत ।
 दया बुद्धि कर देवता वाजते, दुष्ट को केवते दानव दूत ॥
 इसी शरीर से जगत भला कहते, चोर के शीश पे उड़ती जूत ।
 इसी शरीर से अमृत पीवते, झूठा को मानवी पावते मूत ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, कामी की जगत में नहीं हे कूत ।
 अवगुण को छोड़ के गुण को लेवते, वोही को देखलो असल का पूत

॥ 137 ॥

राज ही जगत के श्री पंच वाजते, आद अवतारां के करब पाया ।
 आगे वड़ाऊ ए युद्ध भारी किया, दानव मार के देव थाया ॥
 काम किया जद राज पदवी पाई, जद सुपी गई जगत माया ।
 राक्षसी वाणिया जात धराय के, गुप्ती पाप को फेर चलाया ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, किसी के नहीं है संप सवाया ।
 वडेरों की चाल वाणिये भुलाई, राज खोवण का रंग लाया

॥ 138 ॥

जगत में धर्म को पृथ्वी पूरती, धर्म को पूरती गऊ माता ।
 गज घोड़ा ऊँट धर्म को पूरते, पीठ बैठाय के गाम जाता ॥
 अज्यां भेड़ी भैंस धर्म को पूरती, दरखतां का नाम हरि दाता ।
 धान का धर्म को नांदिया पूरते, वस्तु निपाये के घर लाता ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, खाल की जुतियां फेर सीवाता ।
 सर्व को धर्म तो ए नर पूरते, नहीं तो जगत वां धूल खाता

॥ 139 ॥

मानवी का धर्म नेकी से चालणा, आत्मा रूप की टेल करणा ।
 बच्चा बुढ़ा पशु चाल नहीं सके तो, उसी को लाय के खुराक धरणा ॥
 पाप चोरी झारी झूठ कपट को, हराम का काम से बहोत डरना ।
 राक्षसी जून को मारके फेंक दो, और की सेवा कर जरूर तरणा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, लुच्छाई फेल में नहीं फरणा ।
 धर्म गुरु गम कर, साच धर्म का रख सरणा

॥ 140 ॥

संत फकीर को जगत जीमावते, भाव से भोजन सब खाता ।
 अज्या भेड़ी गरु जगत में मारते, पाप से धर्म भी दठ जाता ॥
 राक्षस करोड़ों ही जीव मरावते, तेल का फल कोई नहीं पाता ।
 तीरथ व्रत में भूला भटकते, गंगा का नीर में नित नाता ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, इससे कारज नहीं थाता ।
 पाप हत्या को देखते नहीं वे, धूल उड़ावण यू ही धाता

॥ 141 ॥

गुप्ती करोड़ों ही जीव मरावते, पृथ्वी के अंग रोग उठे ।
 रोग से मानवी धान खोले ज्यूं, दोखा से पृथ्वी का जल खूटे ॥
 वाणिया भाव में वस्तु घटाय के, जगत को वाणिया पूर लूटे ।
 पचास को जेवर पांच में लेवते, इसी वद जगत में लोक टूटे ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, भूखा मरे पछे प्राण छूटे ।
 इण पद वाणिये जगत डुबोविया, बुम के वार कोई नहीं है पूठे

॥ 142 ॥

कबुक पाप को कम करावते, पृथ्वी के अंग दुख थोड़ा ।
 जद पृथ्वी माता जल को पीवती, मीठे ही बोलते कोयल मोरा ॥
 तो दूसरा जादू से तीड़ उड़ावते, खेतियां खाय के करत कोरा ।
 नहीं जादू से मरी पड़ावते, यू ही कर जगत को पूर तोड़ा ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जगत जीवों को तो बहोत फोड़ा ।
 काल मरी तीड़ तीनों ही दुख से, आखिर मानवी दोरा का दोरा

॥ 143 ॥

वाणिये पाप को कलजुग थापियो, जाल का वेद को तैयार कीदा ।
 विष्णु देवों की छाप लगाय के, ब्राह्मणों के सभी हाथ दीदा ॥
 घर-घर ब्राह्मणों जगत भुलावियो, एक नहीं राखिया साफ सीधा ।
 करोड़ों ही को धन ब्राह्मणों ले लियो, जगत को कर दिया फिद फिदा ।
 अन्न धन्न हाड़ बल मांस घटावियो, वाणिये जगत का खून पीधा

॥ 144 ॥

बहु सासु के भी खार पड़ाविया, नणद भोजाई के नहीं बणता ।
 माहिता को बेटा जुतिया मारते, भाईयों को भाई भी नहीं गणता ॥
 देराणी जेठाणी चोटला खेंचती, मार नखों से तो बाल उखणता ।
 मामी भाणेजां को लाल से मारती, बहन की भाई भी नहीं सुणता ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, कहो किसी का बदला बणता ।
 पाप का जाल से ब्रह्म डुबोविया, धर्म की बात को कोई नहीं भणता ॥ 145 ॥

हलकारा साथ परवाणा भेज लो, दूसरों के हाथ देवणा नहीं ।
 राज हाथों हाथ परवाणां बांच लो, सर्व राजा मिल घालणा सही ॥
 सर्व सरदारों को खातरी देवणा, जब राजो का कारज वेही ।
 धर्म का न्याव में लकड़ो घाले तो, वोई कूं देखलो चोर है एही ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राक्षसी मारिया राज भी वेही ।
 ढील किया सूं तो राज गमावसो, हम तो राज रेवण की केही ॥ 146 ॥

आदा तो वाणिया राज को लूटते, आदा तो जगत का धन लेते ।
 एक गाली देवे दूसरो जूती ले, संग नौकार में एक रेते ॥
 खून में वाणियों कोई पड़े जद, राज के देखतां गाली देते ।
 एक वाणा को तो नागो बणावते, दूसरों सिखाया गरीब वेते ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, राज को कांही का कांही कहते ।
 राज प्रजा को तो साफ तोड़े दिना, बरदधारी कोई राज चेते ॥ 147 ॥

काल मरी तीड़ ब्याज चलावियो, हराम का काम कर बोलते झूठ ।
 पांचों ही पाप से जगत डूबोवियो, जगत को धन भी ले गया लूट ॥
 राज धणी ज्यां को जादू से गालियां, रैयत राज में घाल दी फूट ।
 दरकतो हरिगुण जादू से गालिया, ढेरों की खाल आणदी खूट ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, करोड़ों ही रोग री चलावते मूठ ।
 राजा प्रजा को तो बिमारी केवते, लाखों ही घर गए जड़ा से उठ ॥ 148 ॥

लकड़ी छाणा को वाणिया लावते, फेर भी लावते लद के घास ।
 पिछे उजाड़ में आग लगावते, जादू की अग्नि चलावते खास ॥
 कबुक दूजां की बुद्धि बिगाड़ के, अग्नि फैकावते उण के पास ।
 घास मुंगों कर रोकड़ लेवते, घास की जगत पाड़ते तास ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, करोड़ों ही जीवों को आग में नाश ।
 कई नरह सूं वो जगत डुबोवियो, जीवों के काल तो बारोही मास ॥ 149 ॥

पृथ्वी को ठंडो ताव चढावते, उसी को थापियो सियालो नाम ।
 अग्नि ताव कुं ऊनालो केवते, पाप जादू से वे कराते काम ॥
 ठंडो ऊनों ताव दोय छूटे जद, पाणी को पीवते पृथ्वी राम ।
 दोनों ही ताव से जगत को गालियो, जादू से वाणिये डुबोयो धाम ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते साफ खाली किया जल का ठाम ।
 वारंवार तो इन्द्र बरसता, पाप से बांधिया इन्द्र श्याम ॥ 150 ॥

मानव रुप को ताव छूटे जद, मानवी थोड़ा-सा खावते धान ।
 आठ महिना ताव पृथ्वी को करावते, आठ घड़ी ताव मानव खाण ॥
 ताव छूटा पृथ्वी जल पीये, ज्यूं ताव गया जुग पावते श्याम ।
 माता को रोग तो गर्भ में पहुचगो, जुग तारिया होसी महा धर्म दान ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, दोनों हीन का वदसी मान ।
 लोक लक्ष्मी बिना राज नहीं रेवता, बिन काते कैसे नागर पान ॥ 151 ॥

जादू से कुत्ता का रुप दिखावते, मांस हाड़ों की करे फूल की माल ।
 जादू के जोर से बिल्ली हो जावते, मांस को रांध के दिखाते दाल ॥
 जादू से शराब का दूध देखावते, जादू से हिरण होय मारते फाल ।
 जादू से मर्द का वानर होवते, कूदके बैठते दरखत डाल ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, जादू से फोड़ दी धर्म की पाल ।
 जादू से मर्द का सुर बन जावते, जादू से पहाड़ में उठाते झाल ॥ 152 ॥

जादू के जोर से पाखांड बोलावते, जादू से मर्द का बणवते बैल ।
जादू के जोर से रुंकड़ी बोलावते, जादू से गेबाऊ देखाते महेल ॥
जादू से पक्षी का रूप देखावते, जादू का फकीर सीखते फेल ।
जादू के जोर से जोग पूजावते, जग भूला हुआ करते टेल ॥
सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, खास जादू का ही चलाया खेल ।
धणी को तोड़ के धरब को ले गया, धर्म पे मारते पाप का शेल ॥ 153 ॥

पृथ्वी को आधो शीश दुखे जद, दाहीना सुर का भाण वे काला ।
बाहे तरफ को शीश दुख जद, चंद्र की ज्योत पे फेरते जाला ॥
सारा ही शीश में रोग उठे जद, अंधेरी रात कर पाप का ताला ।
थोड़े-थोड़े पाप कम करे जद, एकम बीज का चाले उजाला ॥
सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, दोनों ही ग्रहण का देख लो ढाला ।
मानवी के शीश रोग उठे जद, सुर होता बंद टूटगी माला ॥ 154 ॥

सूरज चंद्र लाल पड़े जद, पृथ्वी के शीश खून वकार ।
मानवी के शीश खून रसी वे तो, सूर होता बंद पूर दुखार ॥
दोनों ही दम की ज्योत होवे बंद, श्वास को लेवते फाड़ मुखार ।
पाप जादू से वा हरदम डूबती, भला के वास्ते करां पुकार ॥
सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, दोनों ही ग्रहण का एही आकार ।
लाल काला दोई ग्रहण का रोग है, पाप से पृथ्वी को लागती मार ॥ 155 ॥

जादू से स्त्री कपड़े आवती, सतजुग में खून पड़ता नहीं ।
ऋतु पे आवती जोत होता बहोत, खून पड़े जब जोर नहीं कांही ॥
जादू से त्रीया का फूल चटकता, रोग भी घुसगा गर्भ के मांही ।
गौ भैंसों का भी गर्भ गिरावते, फूल चटक के टूटती बांही ॥
सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, ज्योत को तोड़ के करली झांही ।
अणवद जीवों को जोर हटावियों, वाणिये जुग डूबोवियो तांही ॥ 156 ॥

जगत सेठ तो जगत डुबोवते, पटवारी करे गाम का पट ।
 नगर सेठ तो नगर डुबोवते, तीनों ही हरामी नहीं है घट ॥
 कामेती वाणिया राज मरावते, आप तो बैठते घरों में दट ।
 बजारी वाणिया ब्याज करतब कर, लोगों की ईज्जत लेवते फट ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, सर्व राजेश्वर समझलो चट ।
 राक्षसी वाणिया जाल उठावसी, मांही-मांही मरोला कट ॥ 157 ॥

हरकिया कुत्त को मानवी मारते, गोईरा मारिया नहीं है पाप ।
 बाज तो गरीब पंखेरुओं को मारते, बाज को मारणा गोली की टाप ॥
 घातु जहेरी कुत्तों जरूरी मारना, दूजा को मारे तो कीजिये माफ ।
 जीवों के पीछे तो जीव लागु किया, वाणिया कराते होम का जाप ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, धर्म को वाणिये उठायो साफ ।
 सर्व जीवों पर आफत नाखली, दया के उपर मारली थाप ॥ 158 ॥

सर्प बिच्छु जहेरी जरूरी मारणा, इण को मारियां नहीं है दोष ।
 शेर चीता नार गरीब को मारते, तीनों को मारे तो काय का सोच ॥
 आठ करोड़ जहेरी गरुड़जी होमिया, पाप नहीं गणते रखते जोश ।
 राक्षसी वाणिया मारिया पाप नहीं, जगत को मार के धन लियो खोस ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, पास्तों राजा में नहीं है होश ।
 एक मारे ज्यांकु तो फांसी चढावते, जुग मारे ज्यापे क्यूं नहीं रोष ॥ 159 ॥

काल पड़ाय के धन कब्जे कर, पृथ्वी नाम का खोलते पाप ।
 पाप छूटा पृथ्वी निर्मल होवे जद, पृथ्वी पाणी कूं पीवती आप ॥
 मानवी काल में जादू जाणते, बरसे के जादू को भूलते साफ ।
 एक दो साल वरसे भूल पाड़ के, फेर पटकते काल को ताप ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, लड़का खोल भागे मां-बाप ।
 भूखां मरे फेर जादू को जाणते, हाय-हाय मरुं जपते जाप ॥ 160 ॥

काल मरी पाड़ जगत भूलाविया, जगत को केवते करत भगवान ।
 अन्न पाणी सुख आद अनाद से, सर्व सुखी होते दरखत पान ॥
 काल मरी तीड़ वाणिये चलाये, समझ लो हिन्दू मुसलमान ।
 मालिक तो सर्व सुख वणाविया, मेवा फल लक्ष्मी सर्वे ही धान ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, पृथ्वी सर्व को पूरती दान ।
 राक्षसी वाणिये पाप जादू कर, जगत मटी मेल लेलीई श्यान ॥ 161 ॥

जैन का पंथ का वेद बणाविया, उसी में लिख दी धर्म की बात ।
 गुप्ती करोड़ों ही जीव मरावते, हरदम प्राण कूं करते घात ॥
 काम पड़े जद वेद देखावते, धर्म के उपर मारते लात ।
 सारे तो लोक भी साहुकार जाणते, भेद में ठेठ से राक्षसी जात ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, करोड़ों ही जगत में पाड़िया खात ।
 वेद के भरोसे राज नहीं रेवणा, राज भी नहीं है राजों के हाथ ॥ 162 ॥

वाणिया इन्द्र चालाकी करते, फेर भणावते पूजा को नाम ।
 लोक देखाउ तो धर्म बतावते, भेद में कराते जादू को काम ॥
 पलितों को बल बाकल नाखते, गुप्ती थापियो राक्षसी राम ।
 वाई पे जगत को नाश करावते, लोक तो जाणते वोई है श्याम ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, करोड़ों ही भूतावल गुप्ती गाम ।
 देवता के नाम का भोग धरावते, जगत के पास खर्चावते दाम ॥ 163 ॥

कबुका गौआं में मरी पड़ावते, गौओं को आसरो जगत के भागे ।
 बकरा घेटा में मरी पड़ावते, ठेठ से जगत के आसरो सागे ॥
 कबुक भैंसों में मरी पड़ावते, आसरो तोड़ियों राक्षसी नागे ।
 कबुक बैलों में मरी पड़ावते, दुख से दुख वो जगत को लागे ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, पाप से पाप चलाविया आगे ।
 राक्षसी कुल में ठेठ की चाल है, पाप के वास्ते सुतोड़ा ही जागे ॥ 164 ॥

पृथ्वी वाणिये आसीवाले मांडी, गौआं भी मांडली बही के खाते ।
 अज्यां भेड़ी भैंस आसीवाले मांडी, चारों ही जगत को दूध पीलाते ॥
 ऊंट घोड़ा बैल आसीवाले मांडे, बोझ उठाय के घर पे लाते ।
 बेटियां बहन भी आसीवाले मांडी, वेवार लेवण को वाणिया जाते ।
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, लोक भी बांधिया धान बोवावते ।
 राज के वास्ते काही बाकी रियो, लाखों ही खत किया राज के माथे ॥ 165 ॥

खिचड़ी रांध के आदमी जीमता, गर्म से किनारे खेंच लेते ।
 बर्तन सोफेर कोर चढाय के, ठंडी कर आपके मुख देते ॥
 दीप का धन को यूं निकालते, किनारे-किनारे सेठ रेतें ।
 खिचड़ी के ज्यूं लक्ष्मी खेंचते, वहां से अगाड़ी फेर खेतें ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, फेर तो एक वर्तन रेतें ।
 धणी को तोड़ के धरब को ले गया, भूख से जगत का हाल वेते ॥ 166 ॥

राज गादी छोड़ बाहर नहीं जावते, जावते बाहर तो सोम के दिन ।
 पर नार संग पाप नहीं धारते, तरपत राखते आपको मन ॥
 देव दर्शन कर ध्यान में बैठते, पकड़ लेवते आपकी सुन ।
 पाप हत्या को होण देते नांही, गरीब को देखते वांटते अन्न ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, धर्म का न्याव में रखते तन ।
 नर सुरा होय रण में जुझते, लोक भी केवते ज्यांकों धन ॥ 167 ॥

भजन बणावे राग सुणावते, ब्रह्म की खबर कांही ।
 वेद के मांय से बात निकालते, इणमें बरकत नांही ॥
 बणी बात में सिद्ध होने लगे, यूं नहीं दिखता साईं ।
 भजन वणावे राग सुणावते, पेट भरण के तांही ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, सोच लो ब्रह्म के मांही ।
 इण बातों सूतों जाल टूटे नहीं, होवसी कांही का कांही ॥ 168 ॥

कौनसा पाप से पृथ्वी डूबती, कौनसे पाप से जगाते भूत ।
 कौनसे पाप से देव डूबोविया, काय से डूबगा जगत अवधूत ॥
 जादू का पाप से पृथ्वी डूबती, मांस के होम से जगाते भूत ।
 पाड़ा चढाय के देव डूबोविया, खुराक से डूब गये जगत अवधूत ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, चारों ही पाप के मारलो जूत ।
 राक्षस मारिया पाप चारों ही छूटे, बाप के पहल तो नहीं मरे पूत ॥ 169 ॥

अनोपदास गुरु पूरण मलिया, एब छूटी जद जोणिया धरम ।
 भीतर भेद में भूत ज्यूं रेवतो, धणी भेटिया जद भागियो भरम ॥
 अग्नि काल भी अंग में रेवतो, गुरु पाया जद पैठगी शरम ।
 अक्ल नहीं अभिमान होता बहोत, नकलंग स्वामीजी कर दिया नरम ।
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, न्याव की शरीर में रेवती गरम ।
 बाकी तो शील संतोष से रेवते, मंतर मुंजी का देखते मरम ॥ 170 ॥

साख चौहाण नख मादरेसा, वे अनोपदास जुग नाम ठहराया ।
 पिता हीरासिंह पारस पाया तो, माता जेतादे जस मंगल गाया ॥
 आद धणी गुरु अनोपस्वामीजी, खोट काडे धर्म खेत देखाया ।
 पर त्रीया पाप चोदु की संगत, नर्क छूटा मैं तो स्वर्ग में आया ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, बुद्धि पंहुची जद बीजग वाया ।
 दम के दरखत प्रेम की पत्तियां, फेल छुटा फूल फल पाया ॥ 171 ॥

सर्व राजेश्वर मालिक हमारा, अंग्रेज बहादुर अवसर जाणुं ।
 पास्तां पीर भी मालिक हमारा, धर्म के पुरुष का नाम वखाणुं ॥
 दरखतां हरीगुण रतन चवदे ही, गुण को हरदम दिल में आणु ।
 कोई दूध देवे कोई पीठ बैठावते, नित मति गुण उसी का साणुं ॥
 सोनी हरिचन्द झुलणा केवते, अन्न पाणी से ही भोजन भाणु ।
 पृथ्वी माता सर्व गुण की दाता, वो पृथ्वी गुण आशरे शरीर को थाणु ॥ 172 ॥

ॐ कुण्डलिया ॐ

वद वद लिखदी वार्ता, धर्म न्याव गुरु जोग ।
कला राक्षसी तोड़िया, घटे जायेगा रोग ॥
घटे जायेगा रोग, जगत में संपत वेसी ।
सांचों भी मिट जाई, मानवी सुरा कैसी ॥
कहे सोनी हरिचन्द, सर्व सुख पीवी लोग ।
वद वद लिखदी वाता, धर्म न्याव गुरु जोग
॥ 173 ॥

इति न्याव चिन्तामणि संपूर्ण
॥ संवत् 2012 का आषाढ सुदी 11 गुरुवार ॥
